''उच्च शिक्षित महिलाओं की परिवर्तित प्रस्थिति एवं जीवन शैली''

पुनम कुमारी*

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही महिला का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । सैंधवकालीन सभ्यता के प्रमाण विशेषतः मूर्तियाँ एवं आभूषण महिलाओं की विशेष स्थिति को प्रभावित करते हैं। महिलाओं तथा देवी के रूप में पूज्य रही हैं, उसे शक्ति स्वरूपा माना गया है। प्राचीन ग्रंथ में उसे ज्ञान, शक्ति और समृद्धि का प्रतीक माना गया है। वैदिक काल में महिला को बहुत अधिक सम्मान प्राप्त था। इस काल की महिला समाज में पूज्य मानी जाती थीं। राजपूतों की ऐतिहासिक गाथाओं रामायण, महाभारत आदि में अनेक महिला के उदाहरण मिलते हैं जिनसे उनकी स्थिति का अंदाजा सरलता से लगाया जा सकता है। महिलाओं की परम्परागत दशा के कारण ही भारतवासियों के सभी आदर्श स्त्री में पाये जाते हैं। विद्या का आदर्श' 'सरस्वती', धन का 'लक्ष्मी' पराक्रम का 'दुर्गा', सौन्दर्य की ''रति'', पवित्रता का ''गंगा'', विकरालता का ''काली'', प्रकाश और बुद्धि का ''गायत्री'' में यहाँ तक की सर्वशक्तिमान भगवान को भी जगत–जननी के रूप में माना जाता है। मनु स्मृति में श्रद्धेय माना गया है। महिला परिवार की नींव है, परिवार समुदाय की तथा समुदाय राष्ट्र की इससे स्पष्ट होता है कि महिलायें ही राष्ट्र की नींव है तथा इसका स्थान प्राचीन काल से ही सम्मानीय एवं उच्च रहा है। लेकिन सल्तनत काल में महिलाओं की स्थिति में अधिक गिरावट हुई। बाल–विवाह, देवक्षसी प्रथा, पर्दा प्रथा को बढ़ावा दिया गया। उस समय केवल धनी वर्ग की मुस्लिम महिलाओं को उच्च शिक्षा की थोड़ी बहुत सुविधाएँ थीं। 16वीं तथा 17वीं शताब्दी में जब वस्त्र उद्योग के साथ–साथ नील तथा अन्य उद्योगों की वृद्धि हुई तो ग्रामीण महिलायें रेशम कीड़ों को पालना, रूई के बिनौला निकालना, सूत काटना, कपड़ा बुनना आदि उद्योगों में कार्य करने लगी जिससे उनके स्तर में वृद्धि हुई। बाढ़ के काल में अंग्रेजों के शासन काल के समय भी महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए कुछ सुधार आन्दोलन चलाए गये जिनमें राजा राम मोहनराय द्वारा सती प्रथा को समाप्त करने के लिए चलाया गया आन्दोलन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। 20वीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में महिला संगठनों की स्थापना हुई जिन्होंने राजनीतिक अधिकारों की माँग की।

***शोध छात्रा (समाजशास्त्र) मगध विश्वविद्यालय, बोध गया।**

आजादी प्राप्ति के बाद महिलाओं में राजनीतिक चेतना बढ़ी है और उन्होंने विधायकों, सांसदों, राज्यपाल, मंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति का दायित्व संभाला है। वैश्वीकरण के प्रभाव से महिलाओं में विश्वव्यापी जागरूकता पैदा हुई है। हजारों लाखों महिलाएँ औद्योगिक, शैक्षिक, प्रशासनिक और विभिन्न क्षेत्रों में नौकरी करके आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भर हो रही है। वर्तमान समय में शिक्षा के प्रति महिलाओं में आकर्षण बढ़ा है। आज छात्राएँ अधिकाधिक संख्या में शिक्षा ग्रहण कर रही है। डिप्लोमा कर रही हैं, डॉक्टर, इंजिनियर, अध्यापक, वैज्ञानिक एवं व्यवसाय के क्षेत्र में जा रही हैं। नौकरी कर रही हैं अपनी एक अलग पहचान समाज में बना रही हैं। हर समस्याओं परिस्थितियों का सामना कर रही हैं, उनकी जीवनशैली, सोच, जागरूकता, आकांक्षाएँ आदि में परिवर्तन हो रहा है। जिसका प्रभाव जीवन के विविध क्षेत्र जैसे रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा, विवाह–परिवार, सामाजिक दायरा, साहित्य कला और धर्म आदि जैसे क्षेत्रों पर पड़ता हुआ दिखाई देता है।

वर्तमान समय में शिक्षित महिलाओं के रहन–सहन में भी परिवर्तन हो रहा है। आज वह शिक्षा प्राप्त कर अपने परम्परागत जीवनशैली को परिवर्तित कर रही है।

वर्तमान समय में मशीनी जीवन पद्धति और असुरक्षा की भावना ने महिलाओं को स्वर्ण आभूषण पहनने में बाधक बन रही हैं। आज बहुत सारी उच्च शिक्षित महिलायें बहुत कम चुड़ी पहनना पसन्द करती है। महिलाएँ आज साड़ी के साथ–साथ मैक्सी, सूट एवं सलवार पहनने लगी है। वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर आत्म निर्भर बनना चाहती है तथा आधुनिकता को प्रोत्साहन देना चाहती है। आज शिक्षा के कारण ही भारतीय नारी स्वतंत्र रूप से विचरण कर रही हैं। आज पर्दा प्रथा को तिलांजली दे रही है।

शिक्षा ने विवाह संस्था के स्वरूप को भी परिवर्तित किया है। शिक्षित होने के कारण ही नारी बाल–विवाह के दुष्परिणाम से बच रही हैं तथा बाल विवाह का विरोध कर रही हैं। आज भारत की महिलाएँ पहले शिक्षा प्राप्त करना चाहती हैं, फिर नौकरी तथा इसके बाद ही विवाह की इच्छा रखती हैं। अतः स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने में अधिक समय लगता है और इसके बाद विवाह करने की इच्छा निश्चित रूप से विलम्ब विवाह को प्रोत्साहन देता है। उच्च शिक्षारत छात्राएँ छात्राएँ जनसंचार साधनों से प्रभावित होकर अपने विचारों में आधुनिकता का समावेश कर रही हैं तथा प्रेम विवाह एवं अन्तर्जातीय विवाह का न केवल समर्थन कर रही हैं, बल्कि स्वयं भी इस तरह का विवाह करने की आकांक्षा रखती हैं। शिक्षित महिलाएँ (छात्राएँ) आज खुद जीवन साथी का चयन करने की इच्छा रखती है। महिलाएँ विवाह–सम्बन्धी अपनी पसन्द भी व्यक्त करने लगी है।

शिक्षित महिलाओं के आकांक्षा का प्रभाव उनके पारिवारिक जीवन में भी देखा जा सकता है। शिक्षित महिलाएँ संयुक्त परिवार की तुलना में एकांकी परिवार अधिक पसन्द करती हैं। वह परिवार नियोजन के साधनों को जनसंख्या नियंत्रण के लिए आवश्यक समझती हैं। शिक्षित महिलाओं में यह आकांक्षा उत्पन्न हुई है कि पारिवारिक निर्णयों में उनकी राय दी जाय। परिवार के सदस्य उनकी इस आकांक्षा को देखते हुए उनके निर्णय को स्वीकार कर रहे हैं। उच्च शिक्षित महिलाएँ सामाजिक अन्तःक्रियाओं का क्षेत्र भी विस्तृत हुआ है। आज महिलाएँ जनसंचार के साधनों के द्वारा भरपुर मनोरंजन करने की आकाँक्षा रखती है। वे पढ़–लिखकर अच्छे पदों पर आसीन होने की आकांक्षा रखती है।

आज की युवतियाँ शिक्षा प्राप्त करने तथा उस शिक्षा का उपयोग करने के लिए उत्सुक हैं। परम्परागत हिन्दू परिवार में महिलाओं के लिए घर से बाहर रोजगार प्राप्त करना असामान्य रहा। आज उन्हीं युवतियों को यह शुभ अवसर एवं स्वतंत्रता प्राप्त हो गई है।

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए न केवल कानून निर्मित किए गए बल्कि उनके लिए अनेक विकास कार्यक्रम लागू किए गए। स्वयं सहायता समूहों ने भी उनकी जीवनशैली एवं आकांक्षा को परिवर्तित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाया है। महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृति एवं राजनीतिक जीवन में प्रवेश करने की आकांक्षा रखती है तथा इसमें अपनी भागीदारी भी निभा रही है। इन सारे तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षा, जनसंचार माध्यम, नगरीकरण, औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण, यातायात के विकसित साधन, महिला विकास कार्यक्रम, नौकरी, रोजगार आदि कारकों ने उनके स्थिति को परिवर्तित किया है जिससे उनके विचारों, रहन–सहन, जीवनशैली की रूपरेखा परिवर्तित हो रही है, लेकिन कुछ बाध ाायें भी हैं जो उनके जीवनशैली तथा आकांक्षा को परिवर्तित करने में बाधक बनी हुई है जैसे– दहेज प्रथा, पुरूष मानसिकता, लिंग भेदभाव, भ्रूण हत्या आदि । अतः महिलाओं के उत्थान के लिए इन सारे समस्याओं को मिटाना आवश्यक है जो महिलाओं के आत्मनिर्भरता तथा जागरूकता से ही संभव है।

संदर्भ सूची

1. इन्द्र प्रोफेसर : दि स्टेट्स ऑफ वुमेन इन एशियेन्ट इंडिया, मोतीलाल बनारसी दास, बनारस, 1955.
2. देसाई नीरा : वुमेन इन मॉडर्न, इंडिया वोरा एण्ड कं0 पब्लिशर्स बम्बई, 1957.
3. कपाडिया, के0एम0 : भारत में विवाह एवं परिवार, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1973.

4. व्होरा आशा रानी : भारतीय नारी दशा एवं दिशा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1983.
5. प्रभु, पी.एन. : हिन्दू सोशल ऑर्गेनाइजेशन पोपुलर बुक डिपोट/बम्बे, 1054.
6. देसाई, नीरा : वुमेन इन मॉडर्न इंडिया, वोरा एण्ड कम्पनी, बम्ब्र (1957).
7. प्रमीला कपूर : चेन्जिंग स्टेट्स ऑफ वर्किंग वोमेन इन इंडिया, 1974.
8. सर्चुवल एण्ड बनारसे : एटीट्युड ऑफ कॉलेज गर्ल्स टूवर्डस मैरिज, ए स्टडी इन जनरल ऑफ दि एस0एन0डी0टी0, बम्बई, 1966.
9. राव, एन0जे0 उषा : वीमेन इन डेवलपिंग सोसायटी, आशीष पब्लिकेशन, पंजाबी बाग, नई दिल्ली, 1985.
10. चौधरी के0 प्रतीमा : चेन्जिंग वैल्यूम एमांग यंग वीमेन, अमर प्रकाशन, नई दिल्ली ।